B.A. Part-I

Dr. Usha Choudhary

Thinking

Question:— What is thinking? Thinking is a problem solving process" Discuss?
चिन्तन क्या है? चिन्तन समस्या समाधान की प्रक्रिया है, इसकी विवेचना करें।

Answer:— चिन्तन (thinking) का सामान्य अर्थ किसी भी विषय या वस्तु के बारे में कुछ सोचना समझना या विचार करना होता है। चिन्तन के द्वारा ही हम किसी विषय या वस्तु के बारे में कोई निर्णय या निष्कर्ष निकालते हैं। परन्तु मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से चिन्तन भी स्मरण, शिक्षण, प्रत्यक्षीकरण इत्यादि मानसिक प्रक्रियाओं के समान ही एक मानसिक प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया मनुष्यों में सबसे अधिक विकसित रूप में पाई जाती है। वास्तव में इसी प्रक्रिया के कारण मनुष्य अन्य प्राणियों से अधिक श्रेष्ठ माना जाता है। मानव जीवन में हमेशा कोई न कोई समस्या (Problem) उत्पन्न होती ही रहती है। जिसके समाधान में वह इस प्रक्रिया का ही सहारा लेता है। अर्थात् चिन्तन मनुष्य की एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी न किसी समस्या का समाधान होता है।

चिन्तन की परिभाषा देते हुए विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न प्रकार के विचार व्यक्त किए हैं:—

(वारेन) "Warren" नामक विद्वान के अनुसार, "चिन्तन व्यक्ति के समक्ष उपस्थित समस्या से उत्पन्न होने वाली एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें प्रयत्न और भूल के द्वारा समस्या का समाधान हुआ जाता है।"

"Dashiell" नामक विद्वान के अनुसार, "किसी भी समस्या समाधान की आंतरिक कहानी ही चिन्तन है।"

"English" नामक विद्वान के अनुसार, "चिन्तन एक ऐसी अप्रत्यक्षात्मक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति किसी वस्तु या परिस्थिति के विभिन्न पहलुओं से अवगत होता है।"

इस तरह हम देखते हैं कि विभिन्न विद्वानों के इन विचारों में बहुत कुछ समानता है। लगभग सभी विद्वान चिन्तन को समस्या के साथ सम्बंधित करते हैं। इसलिए हम इसकी एक उपयुक्त परिभाषा देते हुए यह कह सकते हैं कि,

"Thinking is a higher order covert symbolic mental process which is concerned with perception of a problem and finding of our appropriate soulation."

अर्थात "चिन्तन एक उच्चस्तरीय अव्यक्त प्रतीकात्मक मानसिक प्रक्रिया है। जिसका सम्बंध किसी समस्या का प्रत्यक्षीकरण करने तथा उसका उपयुक्त हल ढूंढने से रहता है।"

इस तरह चिन्तन का सम्बंध मुख्य रूप से समस्या समाधान की प्रक्रिया से ही सम्बंधित है।

समस्या समाधान (Problem solving):— चिन्तन के स्वरूप की व्याख्या से यह स्पष्ट हो जाता है कि समस्या समाधान (Problem solving) इसका एक मुख्य रूप है। इसके इसी रूप के आधार पर कुछ विद्वान इसे समस्या समाधान की प्रक्रिया (Problem solving processes) भी कहते हैं। प्रत्येक चिन्तन का प्रारम्भ किसी न किसी प्रकार की समस्या से ही होती है तथा इसका मूल उद्देश्य भी उस समस्या का सही समाधान ढूंढना ही होता है। चिन्तन वास्तव में समस्या की उत्पत्ति के साथ ही शुरू होती है और तब तक चलती रहती है जब तक कि उस समस्या का समाधान नहीं हो जाता। अर्थात चिन्तन की सम्पूर्ण क्रिया समस्या और उसका समाधान ढूंढने में ही केन्द्रित रहती है। इसके इसी स्वरूप के आधार पर "Robbenbirger" नामक विद्वान ने कहा है कि,

"Thinking is puzzle sloving."

अर्थात "चिन्तन समाधानमूलक होती है।"

चिन्तन के द्वारा किसी समस्या का समाधान कैसे होता है या किसी भी समस्या के समाधान में यह मानसिक प्रक्रिया किस प्रकार कार्य करती है। यह एक ऐसा प्रश्न है जो इसके स्वरूप की ओर अधिक स्पष्ट करता है। समस्या के समाधान में चिन्तन अनेक अवस्थाओं से गुजरती है जिनमें कुछ प्रमुख निम्नांकित है:—

[i] समस्या पूर्ण परिस्थिति की उपस्थिति (Presence of problem situation):— चिन्तन की उत्पत्ति किसी न किसी समस्या से ही होती है, इसलिए चिन्तन की प्रक्रिया का प्रारम्भ किसी समस्या के उपस्थित होने से होता जब भी कोई समस्या हमारे सामने उपस्थित होती है तो हम उसके बारे में सोचना, विचारना या चिन्तन करना आरम्भ करते हैं। कोई समस्या एक प्रेरणा के रूप में हमें प्रेरित करती है जिससे प्रभावित होकर हम उसके समाधान के बारे में चिन्तन करते हैं। जैसे किसी विद्यार्थी के सामने जब कोई विषय प्रश्न बनकर उपस्थित होता है तो वह उसके समाधान के लिए विभिन्न प्रकार से चिन्तन करता है। इस तरह चिन्तन प्रक्रिया की यह पहली शर्त है कि समस्या को उपस्थित होना ही चिन्तन का आधार है।

[ii] प्रतीकात्मक स्वरूप की विचारात्मक प्रक्रिया (Symbolic nature of thinking action):— जब कोई समस्या उपस्थित होती है तो उसके समाधान के लिए हमारे मन में विभिन्न प्रकार के विचारों का तांता लग जाता है। एक के बाद एक विचार मन में उठते हैं और मिटते हैं। परन्तु ये सारे विचार एक प्रतीक (Symbolic) के रूप में मन में उठते हैं। जिस विचार का प्रतीक समस्या समाधान में सहायक सिद्ध नहीं होता उसे हम छोड़ देते हैं परन्तु विचारों का जो प्रतीक उपस्थित समस्या के समाधान में उपयोगी दिखाई देता है उसे हम अपना लेते हैं और उसी के आधार पर समस्या का समाधान प्राप्त होता है। जैसे:— जब कोई विद्यार्थी परीक्षा में प्राप्तांक के बारे में

सोचता है तो इसके लिए विभिन्न प्रकार के प्रतीक के सहारे विभिन्न प्रकार से सोचता है। वह किताब, नोट, पेंसिल, ब्रुश, चोटी आदि प्रतीकों के आधार पर समस्या का सही समाधान ढूँढने का प्रयास करता है। इस प्रकार thinking के समय व्यक्ति के मन में विभिन्न प्रकार के विचार प्रतीक के रूप में प्रकट होते हैं जो समस्या के समाधान में उपयोगी साबित होते हैं।

[iii] विभिन्न सामग्री को एकत्र करना (Assembling the different material) :— उपस्थित समस्या के सम्बन्ध में विचार-विमर्श के बाद जब कोई एक निश्चित समाधान निकलता है तो हम उसी के अनुसार समस्या समाधान से सम्बंधित विभिन्न प्रकार की सामग्रियों को एकत्र करते हैं। समस्या के समाधान में उपयोगी सभी सामग्रियों को एकत्र करने के बाद ही हम समस्या के समाधान में क्रियाशील होते हैं। समस्या के समाधान में किस-किस सामग्री की आवश्यकता है उस सामग्री की व्यवस्था क्या होनी चाहिए तथा क्या-क्या सावधानियाँ रखनी होंगी। इन सारी बातों के संदर्भ में विभिन्न सामग्रियों की व्यवस्था की जाती है। यह चिन्तन प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अवस्था है।

[iv] एक निश्चित लक्ष्य की ओर निर्देशित होना (Directed to a definite goal) :— जब विभिन्न प्रकार की सामग्रियों को एकत्र करके समस्या समाधान की प्रक्रिया आगे बढ़ती है तो उसका एक निश्चित लक्ष्य होता है। किसी भी चिन्तन प्रक्रिया का सम्बंध जिस समस्या के समाधान से होता है वह उसी के लिए एक निश्चित दिशा में निर्देशित होती है और जब तक उसे अपने लक्ष्य (Problem solve) की प्राप्ति नहीं हो जाती तब तक उस दिशा में निर्देशित या सक्रिय होती रहती है। जैसे :— जब कोई विद्यार्थी गणित के प्रश्न का हल करने के लिए चिन्तन का सहारा लेता है तो उसके सारे विचार या प्रयास उस प्रश्न का सही हल ज्ञात करने के उद्देश्य से ही

निर्देशित होते हैं। अर्थात् चिन्तन में एक निश्चित लक्ष्य की ओर अग्रसर होना दिखाई देता है।

[V] प्रयत्न और भूल की प्रक्रिया (Trial and error process):— चिन्तन में प्रयत्न और भूल की प्रक्रिया भी पाई जाती है। समस्या के समाधान के लिए व्यक्ति के मन में अनेक विचार आते हैं और जाते हैं। वह प्रयत्न और भूल के सहारे ही समस्या का उचित समाधान निकालने का प्रयास करता है। जब एक विचार से समस्या का समाधान दिखाई नहीं देता तो वह दूसरा विचार अपनाता है और जब उससे भी सही समाधान नहीं निकलता तो तीसरा, चौथा या पाँचवा विचार या तरीका अपनाता है। इस तरह उसके चिन्तन में प्रयत्न और भूल की क्रिया तब तक चलती है जब तक समस्या का कोई उचित समाधान प्राप्त नहीं हो जाता।

[vi] समाधान का वस्तुगत परीक्षण और संशोधन (Objective test and revision of the solution):— प्रयत्न और भूल की क्रिया द्वारा प्राणी को जब उपयुक्त समस्या का कोई उचित समाधान निकल आता है तो वह उस समाधान की वस्तुगत परीक्षण या निरीक्षण करता है। वह उस समाधान के सत्यता और भौगमता की जाँच करता है और यह देखता है कि क्या इस समस्या से उपयुक्त समस्या समुचित रूप से हल हो जायेगी। इस जाँच के बाद जब उसे समाधान की सत्यता और उपयोगिता पर विश्वास हो जाता है तो वह इसे अपना लेता है और समस्या के समाधान में जुट जाता है।

[vii] समस्या का समाधान (Solution of the problem) समाधान का क्रियान्वयन (Implementation of the solution):— समस्या के उचित समाधान मिलने के बाद प्राणी उसे कार्यरूप में परिणत करके समस्या का समाधान करता है और जैसे ही उपयुक्त समस्या का समाधान होता है उससे सम्बंधित चिन्तन भी समाप्त हो जाती है। अर्थात् समस्या का समाधान ही चिन्तन

प्रक्रिया का अंत होता है।

इस तरह हम देखते हैं कि, चिन्तन प्रक्रिया का आरंभ समस्या की उत्पत्ति और उसके समाधान के बीच ही स्थित है। चिन्तन का स्वरूप समस्या के स्वरूप पर ही निर्भर है। अर्थात् उपस्थित समस्या जैसी होती है वैसा ही हमारा चिन्तन भी होता है। इसलिए चिन्तन को समस्या समाधान की प्रक्रिया कहना सही लगता है।

The end